राम-रहीम और तबाही और मौत

(डबल सीक्रेट एजेण्ट 00½ राम-रहीम)

लेखक :- बिमल चटर्जी • चित्रांकन :- दिलीप कदम, विजय कदम, त्रिशूल कॉमिक्स

और उस बटन के दबाते ही–
धुड़म-धड़ाम!

अफसोस, कोई जिंदा नहीं बचा। पता नहीं ये हमलावर कौन थे और हमें क्यों मारना चाहते थे?

दरअसल राम-रहीम को मरवाने वाला पड़ोसी देश का एक खतरनाक एजेण्ट वांग-ली था, जो भारत स्थित अपने एजेण्ट मि. एक्स की मदद से बार-बार राम-रहीम पर आक्रमण करवा रहा था। इस कार्य के लिए वांग-ली की सरकार ने मि. एक्स को करोड़ों रुपये दिये थे।
राम-रहीम को मारना तुम्हारे भाड़े के आदमियों के वश का रोग नहीं है मि. एक्स! इन असफलताओं के बाद अब स्वयं तुम्हें ही मैदान में आना होगा। उन दोनों छोकरों का मरना बहुत जरूरी है। और वह भी बहुत जल्द।
ठीक है। अब मैं अपनी योजनानुसार स्वयं काम करूंगा और इस बार उन दोनों की मौत निश्चित होगी।

और फिर मि. एक्स ने राम-रहीम को मारने के लिए एक भयानक योजना बनाई। उसने पहले राम-रहीम को फोन करके एक खास जगह पहुंचने के लिए कहा। और जब राम-रहीम ने घर से बाहर निकलकर उस स्थान पर पहुंचने के लिए टैक्सी पकड़ी...

...तो वे इस बात से बिल्कुल ही बेखबर थे कि वह टैक्सी मि. एक्स के ही आदमी की थी और उसमें एक शक्तिशाली टाइम बम फिट था। यही नहीं, मि. एक्स ने एक स्थान पर टैक्सी को हैलीकॉप्टर द्वारा उठवा लिया...

...और हैलीकॉप्टर टैक्सी समेत राम-रहीम और टैक्सी ड्राइवर को गर्क करने के लिए समुद्र की ओर चल पड़ा।
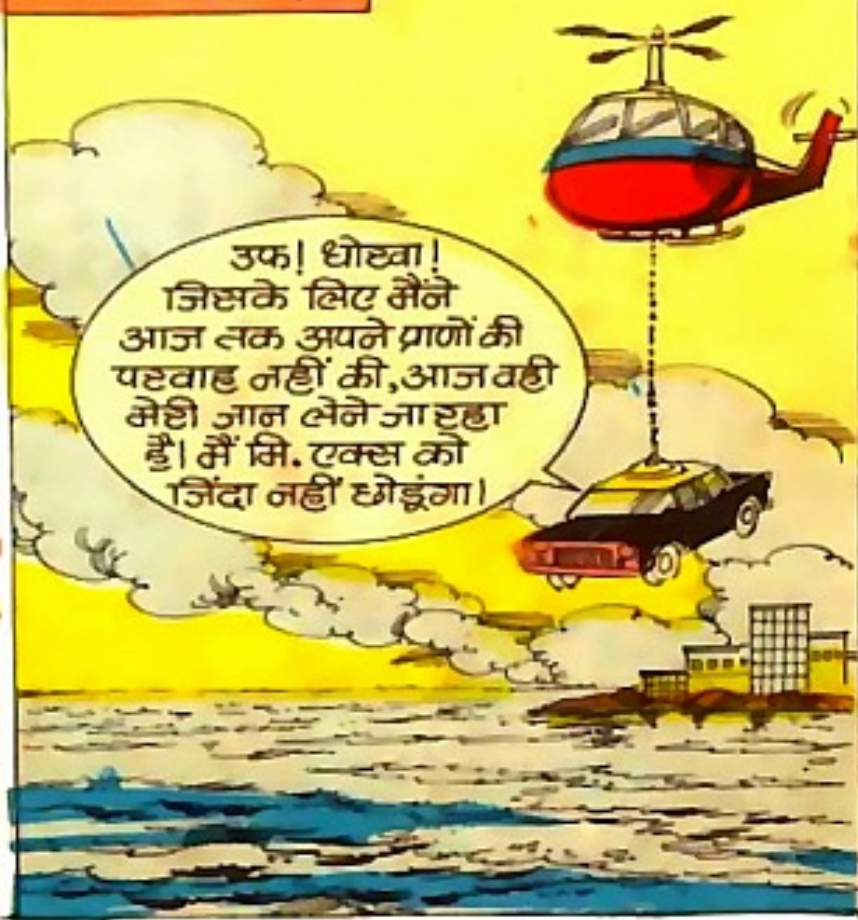
राम ने मौका उचित जान ड्राइवर से असलियत जानने की कोशिश की।

और ड्राइवर ने मि. एक्स के बारे में, जो कुछ वह जानता था, सबकुछ उन्हें बता दिया।

तभी हैलीकॉप्टर ने समुद्र के ऊपर से जाकर टैक्सी को अपनी चुम्बकीय प्लेट से मुक्त कर दिया। टैक्सी भीषण वेग से समुद्र की ओर गिरने लगी...

उस ह्वेल को देखकर अधमरे से हो रहे ड्राइवर के प्राण-पखेरू उड़ गये। जबकि राम-रहीम स्तब्ध से टैक्सी पर झपटती ह्वेल को देख रहे थे।

???

दोस्तो! यहां तक की कहानी आप मनोज चित्रकथा के पिछले अंक "राम-रहीम और कत्ल का अभियान" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।
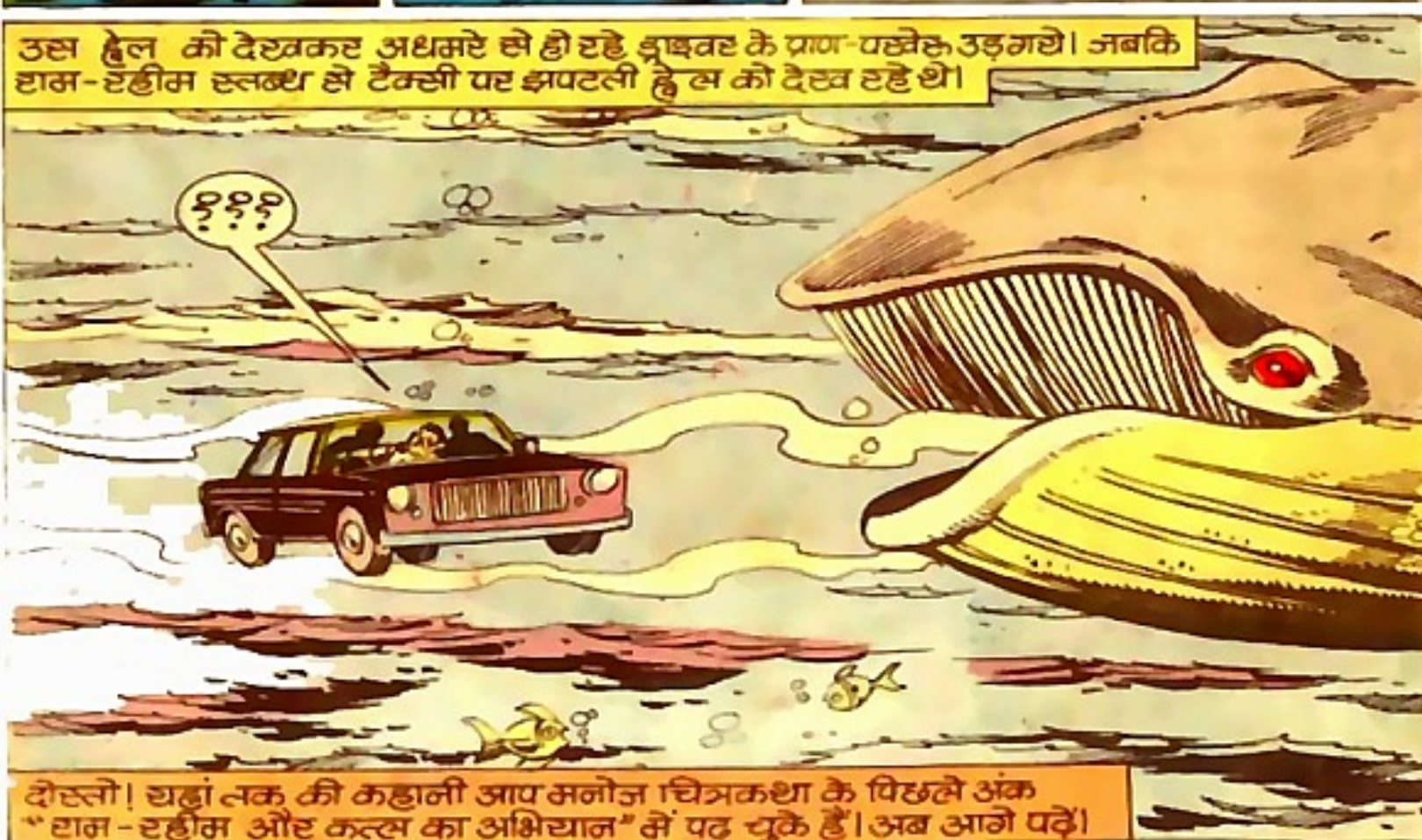
टैक्सी के बिल्कुल निकट पहुंचकर व्हेल ने अपने विकराल व विशाल मुंह को खोला और राम-रहीम ने सिहरकर अपनी आंखें बन्द कर लीं।
शायद ईश्वर को हमारा यही अन्त मंजूर था।

व्हेल ने टैक्सी का अग्रभाग अपने गुफा जैसे मुंह में दबोच लिया।
उफ!
आह!

तभी—
धड़ाम...!

उस भयानक विस्फोट के साथ ही व्हेल का मुंह व टैक्सी के अग्रभाग के परखचे उड़ गये। और टैक्सी के फटते ही राम-रहीम उछलकर दूर जा गिरे।

प्रभु का लाख-लाख धन्यवाद है कि हम दोनों सकुशल हैं।
या अल्लाह! तेरा लाख-लाख शुक्र है। अपराधियों ने जिस टाइम बम पर हमारी मौत का पैगाम लिख दिया था, उसी टाइम बम ने हमारी जिंदगी बचा ली।

पानी में हल-चल समाप्त होने पर राम ने रहीम के निकट पहुंचकर उसे हाथ से ऊपर चलने का इशारा किया।
गड़प-गड़प!

दोनों तेजी से ऊपर उठने लगे।

और कुछ देर बाद -
उफ! खुदा ने एक बार फिर हमारी जान बचा ली।
ठीक कहते हो। चलो, किनारे की ओर चलें। वरना समुद्री जीव के रूप में फिर हम पर कोई विपत्ति आ सकती है।

लेकिन अभी उन्होंने कुछ ही फासला तय किया होगा कि–
राम भइया! वह देखो, कोई स्टीमर हमारी ओर ही आ रहा है।
हां! फ्लैग से तो वह हमारे देश के समुद्री तट रक्षकों का स्टीमर मालूम पड़ता है।
उन दोनों को स्टीमर पर चढ़ा लो।
ओ.के. कैप्टन!
घर्र... र्र... र्र...!
शीघ्र ही–
ऊपर आ जाओ लड़को।
जी धन्यवाद!
शाबाश!

राम-रहीम के ऊपर पहुंचने पर-
ईश्वर का शुक्र समझो कि हम सही वक्त पर पहुंच गये और तुम समुद्र में समुद्री जीवों का शिकार बनने से बच गये।
हमारी जान बचाने का बहुत-बहुत धन्यवाद सर!
ठीक है... ठीक है। लेकिन यह बताओ कि तुम धरती या आकाश से समुद्र के बीच कैसे पहुंच गये?
एक लांच में समुद्र की सैर करने निकले थे। लेकिन बदकिस्मती से वह डूब गयी और हमें भी अपने साथ ले डूबी।
राम ने असली बात छुपाते हुए एक मनघड़न्त कहानी सुनाई।
राम की कहानी सुनकर-
उस लांच में कोई और भी था या तुम दोनों अकेले ही थे।
बस, हम दोनों ही थे। मैं खुद लांच ड्राइव कर रहा था।
हुम्म! काफी होशियार मालूम पड़ते हो। खैर, पहले कपड़े बदलकर गर्म-गर्म कुछ खा-पी लो, फिर अन्य बातें होंगी। ठीक है।
ही-ही-ही! जी! आपने तो हमारे मुंह की बात छीन ली।

राम-रहीम ने सर्वप्रथम नीचे केबिन में जाकर सेवाराम द्वारा दिये गये कपड़े बदले।

तुम दोनों यहीं कुछ देर आराम करो, तब तक मैं तुम्हारे लिए कॉफी और कुछ खाने के लिए लेकर आता हूं।

ठीक है।

सेवाराम के जाने के बाद –
राम भइया, यह भी अच्छा हुआ कि हमें तटरक्षकों का स्टीमर मिल गया, वरना पता नहीं हम तट तक पहुंच पाते भी या नहीं। और अगर पहुंच भी जाते तो न जाने कितना समय लग जाता।
ठीक कहते हो। भगवान जो करता है, भले के लिए ही करता है। परन्तु इस समय हमें इस विषय में न सोचकर मि. एक्स के बारे में सोचना है।

अरे हां, उसे तो मैं कुछ समय के लिए भुला ही बैठा था। आखिर कौन हो सकता है मि. एक्स ? और वह मेजर...।
रहीम आगे कुछ कहने ही जा रहा था...

... कि सेवाराम ने एक चौड़ी ट्रे के साथ वहां प्रवेश किया।
लो भाई, मैं तुम्हारे लिये सबकुछ गर्मा-गर्म ले आया। इसे खा-पीकर तुममें नई चुस्ती-फुर्ती आ जायेगी।

लो, पहले गर्मा-गर्म कॉफी का आनन्द लो।
और आप!

अरे भाई, तुम लोग लो। तुम लोगों के यहां पहुंचने से पांच मिनट पहले ही हम लोग कॉफी पीकर निपटे थे...

... अरे भाई, संकोच मत करो। चलो, शुरू हो जाओ।

राम-रहीम सेंडविच खाने के साथ-साथ कॉफी की चुस्कियां भी भरने लगे।
क्यों, कैसा लग रहा है दोस्तो?
बहुत अच्छा!

तभी अचानक—
ओह! यह अचानक मेरा सिर क्यों चकराने लगा?
मेरा भी सिर चकरा रहा है राम भइया! साथ ही दिल भी बैठा जा रहा है।

अरे भाई क्या हुआ? खैरियत तो है ना?
न जाने क्यों कॉफी को पीने से हमारा सिर चकराने लगा है।

अरे भाई, शायद कमजोरी के कारण ऐसा हो रहा होगा। पीयो भाई पीयो। पूरी कॉफी पीने के बाद तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगे।
इसमें कुछ मिला है।
नहीं...!

...बहुत बचने की कोशिश की थी उल्लू के पट्ठों ने, लेकिन फिर आ फंसे हमारे चंगुल में।

स्टीमर के ऑफिसर ने न केवल स्टीमर को समुद्र के एक किनारे की ओर मुड़वा दिया, बल्कि अपनी सफलता की रिपोर्ट भी मि. एक्स को दे दी।

उन्हें तुरन्त अड्डे पर पहुंचाओ, लेकिन सावधान रहना। इस बीच वे होश में आकर कोई गड़बड़ करने की कोशिश न कर बैठें। बहुत ही खतरनाक हैं दोनों।

आप निश्चिन्त रहें बॉस!

और जब राम-रहीम को होश आया तो उन्होंने अपने आपको एक लम्बे-चौड़े हाल में पाया, जिसमें चारों तरफ सशस्त्र आदमी फैले हुए थे।
आह! मैं कहां हूं?

वैलकम बच्चो, हम तुम्हारा स्वागत करते हैं।
ओह! तुम मि. एक्स!

ओह! तो तुम मुझे जान गये। जरूर तुम्हें हमारे टैक्सी ड्राइवर ने यह जानकारी दी होगी।
तुम बिल्कुल ठीक समझे मि. एक्स! अफसोस कि हम तुम्हारे उस बेचारे ड्राइवर को बचाने में नाकामयाब रहे।

शंकर की मौत का हमें भी अफसोस है लड़को, लेकिन बड़े कामों में इस प्रकार की कुर्बानियां देनी ही पड़ती हैं। फिर हमें इस बात की बेहद खुशी भी हो रही है कि तुम दोनों इस वक्त जिंदा हमारे कब्जे में हो।
क्यों, क्या अब हमें जिंदा मेजर बांगली के हवाले करने का इरादा है।

ओह! तो तुम मेजर वाग-ली के बारे में भी जानते हो!
हां, हम जानते हैं कि तुम इसी गंजे के इशारे पर हमारी जान के पीछे पड़े हुए हो।

क्या कहा...?
मैं ठीक ही कह रहा हूं टकले। तुम हमसे अपने देश में हुई बरबादी का बदला लेना चाहते हो। लेकिन अफसोस तो इस बात का है कि तुम्हारे इस काम में हमारे ही वतन का एक दोगला कुत्ता तुम्हारा साथ दे रहा है।

खामोश!

मैं तुम्हारी बोटी-बोटी काट डालूंगा।
शांत हो जाओ मेजर! प्लीज, शांत हो जाओ...

...यदि तुमने इन्हें मार दिया तो तुम्हारी सरकार की नई योजना अधूरी ही रह जायेगी, जिसकी वजह से तुमने हमें इन्हें ज़िंदा ही सौंपने के लिए कहा था।
ओह! हां!

जुर्म करने का कानूनी लाइसेंस प्राप्त किये कुछ वर्दीधारी गुण्डों की कहानी।

पेश करती है

अर्जुन पंडित

का थ्रिल सस्पैंस व इन्वेस्टीगेशन से भरपूर

प्रथम नवीनतम उपन्यास

ठीक है छोकरो, फिलहाल तुम्हारे जो जी में आये, बक लो। लेकिन बस एक बार तुम्हें अपने देश में पहुंचा दूं, फिर तुम्हें बताऊंगा कि वांग-ली किस दरिन्दे का नाम है।

वांग-ली की बात सुनकर राम-रहीम चौंक उठे।
अपने देश में!
ओह! तो यह अब हमें अपने देश में ले जाने की फिराक में है।

अब तो तुम अच्छी तरह समझ गये होगे कि इस बार तुम दोनों को मारने की बजाय क्यों जिंदा रखा गया है?
हां। अब तो हम तुम्हारा और तुम्हारे गंजे साथी का पूरा मकसद समझ गये हैं।

हा-हा-हा!

हा-हा-हा! बेचारे असहाय चूहे।

लेकिन वे सभी इस बात से बेखबर थे कि उन्हें बातों में उलझाये राम-रहीम अपने नाखूनों में लगे ब्लेडों से अपने पीछे मुड़े हाथों के बंधनों को काटने में संलग्न हैं।

कैप्टन शेख, इन दोनों को फिर से बेहोश करके इनका पार्सल बना दो। फिर इन्हें हमारे मित्र गांग-ली के देश की सीमा तक किस तरह पहुंचाना है, यह तुम अच्छी तरह से जानते हो।
यह काम मेरे बायें हाथ का है बॉस! आप ज़रा भी चिंता न करें! सबकुछ आपके मन मुताबिक ही जायेगा।
कहकर कैप्टन शेख राम-रहीम की ओर बढ़ा...

...उसी क्षण राम-रहीम की आंखें एक-दूसरे से टकराईं और उनमें इशारों का कोई आदान-प्रदान हुआ...
...और फिर जैसे ही कैप्टन राम-रहीम को बेहोश करने के लिए उनके निकट पहुंचा—
कड़ाक!
धड़ाक!
आह!
उफ!

और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता—
खबरदार, जो किसी ने अपने स्थान से हिलने की भी मूर्खता की तो मैं तुम्हारे इस हैडमास्टर की गर्दन की हड्डी एक ही झटके में तोड़ डालूंगा।
ओह! यह दोनों आजाद कैसे हो गये

तब तक रहीम दो गार्डों से उनकी ब्रेनगन झपट चुका था।

ओह! यू...!

खबरदार टकले और मि. एक्स, अब भूलकर भी अपने आदमियों को गलत आदेश मत देना, वरना तुममें से कोई भी जिंदा नहीं बचेगा।

गन हाथ में आते ही राम ने अंधा-धुंध फायरिंग आरम्भ कर दी।

रहीम भी तुरन्त हरकत में आ गया।

फिर दोनों तरफ से फायरिंग शुरू हो गई।

बचे-खुचे गार्ड्स भी पोजीशन लेकर राम-रहीम पर फायरिंग करने लगे। जबकि राम-रहीम भी पोजीशन ले चुके थे।

धांय-धांय!

तड़-तड़-तड़!

इस तरह काम नहीं चलेगा। वे हमारे लगभग सभी साथियों को मौत के घाट उतार चुके हैं। उनके पीछे जाकर उन्हें कवर करने की कोशिश करता हूं।

धांय-धांय!

जान जोखिम में डालने से कोई फायदा नहीं होगा मि. एक्स! मेरे पास एक ऐसा हथियार है, जो उन्हें चारों खाने चित कर देगा...
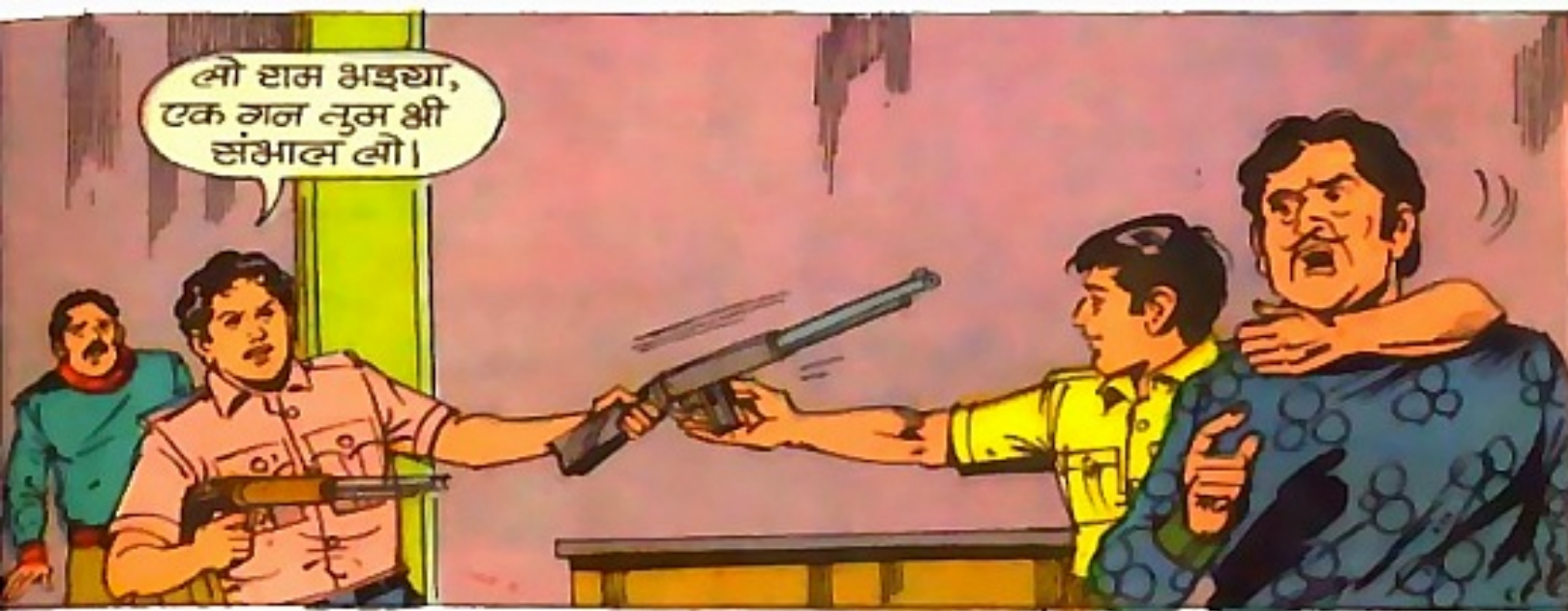
तभी कुछ गार्ड चारों तरफ से निकलकर फायरिंग करते हुए राम-रहीम की ओर बढ़े।
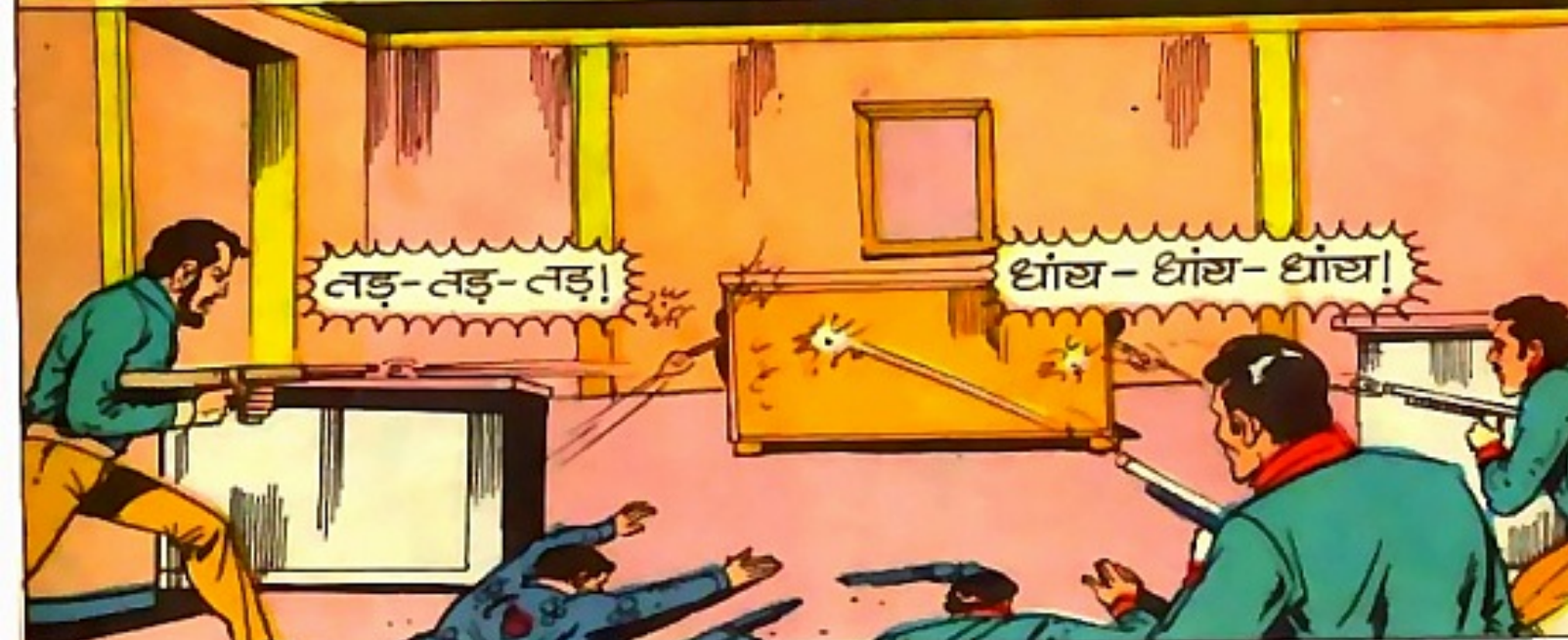
इधर वांग-ली ने अपने रिवॉल्वर में एक विशेष किस्म की गोली भरी।
???

और फिर—
खट!
खट!

वह विशेष गोलियां रिवॉल्वर से निकलकर, जहां राम-रहीम छिपे थे, उनके निकट पहुंचकर फटीं।
धड़ाम!
धड़ाम!
???
!!!

गोलियों के फटते ही वहां बड़ी तेजी से धुआं फैलने लगा।
अरे, यह क्या बला है?
मैं समझ गया। यह बेहोश करने वाली गैस है।
धांय-धांय!

ओह! फिर तो हम बुरी...तरह खों-खों...फंस गये।
धांय-धांय!

खों-खों। हां, अब हम न तो यहां ठहर सकते हैं, और न ही यहां से हट सकते हैं। खों-खों... सांस रोकने से भी कोई फायदा नहीं, क्योंकि यह आंखों के द्वारा अपना असर डालती है। खों-खों!
खों-खों। अब क्या होगा?

वही, जो भगवान को मंजूर होगा। वैसे एक बार फिर मौत हमारे निकट... खों-खों-खों।
आह!

हफ्फ-हफ्फ! आह!

उस बेहोश करने वाली गैस की चपेट में केवल राम-रहीम ही नहीं आये, बल्कि कई गार्ड्स भी बेहोश होकर फर्श पर लुढ़क गये।

वांग-ली और मि. एक्स प्रसन्नता से उछल पड़े।

वो मारा! वे दोनों बेहोश हो गये।

हां! आओ, अब जल्द से जल्द उन्हें ठिकाने लगायें। अब मैं उन्हें एक क्षण के लिये भी कोई और मौका नहीं देना चाहता।

तब तक गैस छंट चुकी थी।

मि. एक्स! तुम अपने आदमियों से कहकर जल्द से जल्द इनका पार्सल बनवाओ और मेरे जहाज तक पहुंचा दो। मेरा जहाज पश्चिमी किनारे पर तैयार खड़ा है।

मैं जानता हूं मेजर! तुम अपने जहाज में पहुंचो, कुछ देर बाद मैं स्वयं इन दोनों को लेकर तुम्हारे जहाज पर पहुंच रहा हूं।

कुछ देर बाद मि.एक्स की कार समुद्र के पश्चिमी किनारे की ओर जा रही थी। उस कार की डिक्की में बेहोश राम - रहीम दो बोरों में बन्द थे।

लगभग एक घण्टे बाद राम-रहीम की अनभिज्ञता में बेहोश राम - रहीम को एक लड़ाकू पोत के ...

... एक विशेष केबिन में पहुंचा दिया गया ...

... और जहाज उसी समय पड़ोसी देश की ओर रवाना हो गया।

कुछ देर बाद सर्वप्रथम राम को होश आया।
ओह! अभी तक हम जिंदा हैं।

रहीम ... रहीम! होश में आओ रहीम!

जल्दी ही रहीम भी होश में आकर उठ बैठा।
ओह! हम कहां हैं राम भइया?
शायद किसी पानी के जहाज में। यह जहाज के नीचे कोई केबिन है।

इसका मतलब है, वांग-ली हमें अपने देश में ले जा रहा है।
हां, लेकिन शुक्र है कि उन मूर्खों ने हमारे हाथ-पैर नहीं बांधे।

राम भइया, इस समय क्या बजा होगा?
घड़ी वगैरह तो उन्होंने हथिया लीं, लेकिन फिर भी मेरा अंदाजा है कि सांझ ढल चुकी होगी।

राम भइया, यदि हम एक बार वांग-ली के देश में पहुंच गये तो फिर हमारा जिंदा बचना मुश्किल हो जायेगा। पता नहीं वे बदला लेने के लिए हम पर क्या अत्याचार करें?

तुम्हारा सोचना बिल्कुल ठीक है, इसलिए हमें जो कुछ भी करना होगा, इसी सफर के दौरान करना होगा।
लेकिन तुम करोगे क्या? दरवाजा तो बाहर से बन्द होगा और बाहर हम पर निगरानी के लिए दुश्मनों ने अपने आदमी भी तैनात कर रखे होंगे।

तभी बाहर कुछ आहट हुई तो राम-रहीम खामोश हो गये। फिर जल्दी ही दरवाजा खुला।
लो छोकरो, कुछ खा-पी लो। मि. एक्स व मेजर की कृपा समझो कि वे तुम्हें भूखा नहीं मारना चाहते।

तो क्या इस जहाज में वांग-ली के साथ मि. एक्स सफर कर रहा है।
हां, बॉस तुम्हें मेजर के देश में पहुंचाकर ही वापस लौटेंगे।

तो क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुम लोग हमें सही सलामत अपने देश में ले जाने में सफल हो जाओगे।
कहने के साथ ही राम ने कनखियों से रहीम को एक विशेष इशारा किया।

हां, इसमें क्या शक है? लो, अब और कोई प्रश्न न करके चुपचाप खाना खा लो।

तभी राम ने झुके हुए रक्षक की गर्दन बाज की तरह झपटकर अपनी मजबूत बांहों में जकड़ ली।
गों-गों-गों!

उधर रहीम ने भी दूसरे पहरेदार को कुछ सोचने-समझने का अवसर न देकर एक उछाल भरी और उससे उसकी गन झपट ली।
अरे...ई...ई... यह क्या कर रहे हो तुम?

खटाक्!
उफ!

राम-रहीम ने जो कुछ भी किया, पलक झपकने से पहले ही किया।
छ... छोड़ो मुझे! गड़प-गड़प!

खटाक्!
आह!

वह रक्षक भी बेहोश होकर राम की बांहों में झूल गया।
इसे तुम्हें बेहोश नहीं करना था। रहीम! इससे हमें यहां की जानकारी मिल सकती थी।

जानकारी हम किसी और व्यक्ति से प्राप्त कर लेंगे। मेरे विचार से पहले हमें इन दोनों की पोशाकें और टोपियां पहन लेनी चाहिए।
ठीक है, जल्दी करो। कहीं कोई और न आ जाये।

राम-रहीम ने फटाफट उनके कपड़े पहनकर उनकी गनें संभाल लीं।
तुम यहीं ठहरो, मैं बाहर झांककर देखता हूं।

राम ने बाहर झांका।
शुक्र है, केवल दो ही हैं।

बाहर दो पहरेदार हैं। लेकिन ध्यान रहे, उन्हें मारना नहीं है। केवल बेहोश करना है। वह भी एक को...

...दूसरे से हम यहां के बारे में जानकारी हासिल करेंगे।
ठीक है।

तो आओ मेरे साथ।

राम-रहीम दबे पांव छिपते-छिपाते वहां पहरा देते दोनों पहरेदारों की ओर बढ़े।

- क्या राम-रहीम मिस्टर एक्स और कामरेड को मौत के घाट उतारने में सफल हो सके
- क्या मिस्टर एक्स और कामरेड वांग-ली अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए राम-रहीम को अपने देश ले जाने में सफल हो पाए?
- राम-रहीम ने वांग-ली के जहाज से कैसे मुक्ति पाई?
- क्या चीफ मुखर्जी राम-रहीम की कोई मदद कर पाने में सफल हो सके?
- इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए "मनोज कामिक्स" के इसी सैट में पढ़े